यादें

यादें आती हैं यादें जाती हैं तभी तो यादें कहलाती हैं
यादें हमे सिखाती हैं तभी तो हमे आगे ले जाती हैं
यादें हमे हंसाती हैं यादें हमे रुलाती हैं
तभी तो हमारी यादें वन जाती हैं
यादों के सहारे हम जीते हैं मरते हैं
इसीसे तो जीना सीखते हैं

हर जीवन यादों का भन्डार है
कुछ बेकार है तो बहुत कुछ सार है
कुछ यादें भुलाई जाती हैं तो कुछ भूल में चली जाती हैं
जो यादें भूल कर भी न भूल पाये वो दर्द बन जाती हैं
जो यादे मन को गुदगुदा दें वो प्यार बन जाती हैं
जो भूल कर भी याद न आयें वो भूल कहलाती हैं

जो यादें कल्पना में हों वो सपने कहलाती हैं
हम सब यादों का पुलन्दा हैं
यादें तन से जुडी हैं मन से जुडी हैं
तुम्हारी और मेरी यादें मिल जाय, तो हमारी यादें हो जाती हैं
दोनो की यादें मिल नहीं पाईं तो दुश्मन बन जायेगी वही यादें
नागवार हो जायेगी मुसीबत बन जायेगी यह जिन्दगी

यादें न हो तो दिन रात न हो सुबह दोपहर या शाम ना हो
बदला ना हो बेदिली ना हो बदगुमानी ना हो
यादें इतनी ना बढा लें कि इनके सैलाब मे ढूब ही जायें
यादें इतनी ना बिसार दें कि अपनो को ही भूल जायें
तुम्हारी यादें इतनी बुलन्द हों कि दुनिया याद रक्खे

यादों को सजाना भी एक सलीके का काम है
जैसे कम्प्यूटर में डेटा रक्खा जाता है
जब जी चाहा उस याद या इस याद को उभार लो
जिन यादों को चाहो पीछे धकेल दो
उनकी हस्ती को मिटा डालो उनके निशानो को जला दो
उनकी राख को भी न रहने दो यही जीने की सही कला है

यादों का पुलन्दा मत ढोओ लिख डालो कह डालो सुना डालो
बहा डालो जला डालो यदि यादें तुम्हे भारी लगने लगें
याद रक्खो यह चोपाइ "भगवान के भजन से यादें बिसर जाती हैं "
जब यादें बिसरा देते हैं तभी मन निर्मल तन स्वच्छ अत्मा स्वतन्त्र होगी

लिखी हुइ यादों के पुलन्दे को आत्म कथा कहते हैं
दूसरे लोग यादों को पढते हैं ताकि अपना जीवन सुधार सकें
कल की यादें आज की यादों से मिल कर भविष्य बनायेंगी
यादों के जंगल मे मत भटको उनको बगीचे कि तरह करीने से लगा लो
ताकि जब जी चाहे जिसे तरह कि याद को चाहो चुन कर जयका ले लो

वाइस कहते है की रोशनी मे रहना सीखिये जनाब
हम यादों के अन्धेरे मे हैं हमे इन्हीं मे रहने दो
अन्धेरे हमे उनकी यादों के बहुत पास रखते है
रोशनी आते ही उनकी यादें दफा हो जाती हैं
इसलिये हमे रोशनी भी रास नहीं आती है

बचपन की यादे बाबा दादी नाना नानी ताऊ ताई बुआ
मौसी चाचा चाची की बातों से कहानी सी सजी रहती हैं
लडकपन की यादें एक हसीन जोश से भरी रहती हैं कि
आज हमने उस गुलफाम को देखा उस परी ने हमे देखा
हम यह करके वह लाके इस सारे जहान को बदल देंगे
हम वह बन के वैसा करके पैसा खूब कमा के दिखा देगें

जवानी की यादें बस नोन तेल लकडी मे निकल जाती हैं
या फिर हम राज के साथ हम राज हो जाती हैं
फिर बच्चे उनकी पढाई नौकरी शादी मे ढूबी रहती हैं
कुछ यादें समाज के साथ जुस्तजू से भी जुडी रहती हैं
पर जनाब बुढापे की यादें अपने साथ ही चली जाती हैं
क्योंकि उनको सुनने सुनाने का वक्त ही पास नहीं होता

भूलकर भी जनाब न कहें कि यादें याद नहीं आ रही हैं
वरना पैबन्द लग जायेगा कि हाय लो बेचारे की यादाश्त जाती रही
हमे उन वादों की यादें खूब रहती हैं जब कही से कुछ मिलना होता है
पर हमे उन वादों की याद ही नही रहती जब हमे कुछ देना होता है
ऊपर वाली यादें जब दो जनो की टकराती हैं तो तू तू मैं मैं होती हैं
वो कुछ कहेंगे हम कुछ सुनेंगे और बेवजह फसाद हो जायेगा
क्यों न हम उन वायदों की याद को कैद कर ले फोनोग्राफ में

वो हसीं थे हमने उनके दीदार को मन की यादों मे कैद कर लिया
पर जब इन यादों ने हमे बेजार कर दिया और हम से रहा ना गया
तो जनाब हमने जिक्र कर दिया चन्द लोगो से अपने अन्दाज मे
हमे क्या मालूम था कि जमाना भर दीवाना था उनके दीदार का
फिर तो साहब हमारा बयान इक आला फसाना बन गया रिसालो मे छप गया
जो अपने रकीब थे दुशमन बन गये ओर हम शहर के मजनू करार कर दिये गये

उमेश रश्मी रोहतगी ईकिस सितमबर दो हजार छ नोवी मिचीगन अमरीका